गुरुदेव आध्यात्मिक अभ्यास की जिन तीन बातों को तरज़ीह देते थे, उनमें से एक थी मंत्र विद्या। बाकी की दो बातें थीं सेवा और गुण। उनके मंत्र सिद्ध थे। ये मंत्र उपचार करने और अपना तेज बढ़ाने और आत्मरक्षा करने के साथ-साथ बहुत-से कामों के लिए एक प्रभावी अस्त्र थे, जो आप इस पॉडकास्ट में सुनेंगे।

मंत्र विद्या

गुरुदेव अपने कई मंत्र प्रभावी रूप से इस्तेमाल करते थे और उन्होंने अपने शिष्यों को भी यही सिखाया। उन्होंने बुड्ढे बाबा के मार्गदर्शन में वेद काल के ज्यादातर मंत्रों में बदलाव किए थे। बुड्ढे बाबा एक ऐसे किरदार हैं, जिनके बारे में आप आगे की पॉडकास्ट्स में काफी कुछ सुनेंगे। उन्होंने उनका गायत्री मंत्र बदला और उसमें 8 शब्द जोड़कर उसे महा गायत्री मंत्र बना दिया।

गुरुदेव ने बुड्ढे बाबा की मदद से एक बार फिर महा मृत्युंजय और दूसरे मंत्रों में बदलाव करके उनका प्रभाव बढ़ा दिया था। उन्होंने हमें उपचार के इन अस्त्रों और आत्मरक्षा के शस्त्रों का उपयोग करना सिखाया। जहां यह मंत्र आपके तेज का दायरा बढ़ा देते हैं, वहीं वे स्वयं के विकास के लिए भी कारगर हैं।

गुरुदेव बहुत कम समय में ही अपने शिष्यों को इन मंत्रों में सिद्ध कर देते थे। इससे एक महागुरु के रूप में उनकी काबिलियत साबित होती है।

डेरियस मूस 30 साल से ज्यादा समय से मुंबई स्थान पर सेवा कर रहे हैं। मैंने उनसे चामुंडा देवी मंत्र को लेकर उनके अनुभव के बारे में बात की, जिसका उन्हें बहुत अच्छा अभ्यास है।

सवाल : डेरियस आप कितने समय से मंत्र विद्या का अभ्यास कर रहे हैं?

डेरियस जी : करीब 32 वर्षों से।

सवाल : और आपने किन मंत्रों पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया है?

डेरियस जी : आमतौर पर तो यह चामुंडा देवी मंत्र ही था, जो चामुंडा देवी का मंत्र है।

सवाल : क्या आप हमें बता सकते हैं कि आपने इस मंत्र का इस्तेमाल किस तरह किया और इससे जुड़े कुछ अनुभव?

डेरियस जी : यह ऐसा मंत्र है, जिसका इस्तेमाल सुरक्षा और बचाव करने के लिए किया जा सकता है। किसी की सुरक्षा करने में यह मंत्र बड़ा असरदार रहता है। कभी-कभी आपको बुरी आत्माओं से रूबरू होने के लिए किसी के घर भी भेजा जाता है। जब ऐसी आत्माएं नहीं मानतीं, तो आप उन्हें इन मंत्रों के उपयोग से दूर कर सकते हैं या फिर इन मंत्रों को एक सुरक्षात्मक उपाय के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

सवाल : क्या आप पर कभी हमला हुआ है और आपने इस मंत्र का इस्तेमाल अपने बचाव के लिए किया है?

डेरियस जी : कई बार जी, कई बार। शारीरिक रूप से भी और सपने में भी।

सवाल : क्या आप ऐसे कुछ अनुभव बता सकते हैं?

डेरियस जी : हां एक बार मुझे एक सपना आया था जहां मुझ पर एक बड़ी शैतानी आत्मा ने हमला किया था और मैंने उसे नष्ट करने के लिए चामुंडा देवी मंत्र का प्रयोग किया था।

सवाल : उसे भगाने के लिए या उसे नष्ट करने के लिए?

डेरियस जी : उसे नष्ट करने के लिए।

सवाल : और नष्ट करने से आपका क्या मतलब है?

डेरियस जी : मैं अचानक 20 फीट ऊंचा हो गया था और मैंने अपने हाथ में दो हथियार देखे - दो नीले रंग के टॉर्च थे, जो नीली रोशनी से बने थे और मैंने उस आत्मा के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

सवाल : उम्मीद है आपने उसको अच्छी तरह से पैक किया होगा (हंसते हुए)?

डेरियस जी : हां जी। एक घर था, जो बहुत-सी बुरी आत्माओं से भरा पड़ा था। सात फरिश्ते उनसे लड़ने के पहुंचे लेकिन वो घायल होकर लौट आए। और फिर जीसस क्राइस्ट और मैं गए। हम दोनों ने उनसे संघर्ष किया और सकुशल वापस आ गए। इसमें चामुंडा देवी मंत्र बहुत काम आया।

(अच्छा और ...)

डेरियस जी : और इसका इस्तेमाल उपचार के लिए भी किया जा सकता है।

(अच्छा)

डेरियस जी : जब हमें मरीजों पर इसका प्रयोग करने को कहा गया तो हमने देखा कि यह मंत्र हड्डियों, मांसपेशियों और नसों के दर्द के साथ-साथ लोगों में थकान और तनाव का उपचार भी कर सकता है।

20 फुट की ऊंचाई तो बेहद शक्तिशाली आत्माओं या सूक्ष्म शरीरों द्वारा ही संभव है। कई दशकों तक साधना और मंत्र विद्या करने वाले डेरियस के लिए तो यह एक स्वाभाविक उपलब्धि है।

रिधिम जी, जो देहरादून के अस्थल स्थान पर सेवा करते हैं, पिछले 20 वर्षों से मंत्र विद्या का उपयोग कर रहे हैं। रिधिम जी इस बारे में अपना ज्ञान और अनुभव साझा करते हैं।

सवाल : क्या आप मुझे बता सकते हैं कि क्या आपको कोई मंत्र दिया गया था?

रिधिम जी : हां, मेरे गुरु ने मुझे कुछ मंत्र दिए हैं।

सवाल : तो, क्या आपने इनमें से किसी मंत्र को प्रभावी होते देखा है?

रिधिम जी : हां, मैंने उन्हें देखा है।

सवाल : क्या आप मुझे किसी एक मंत्र और उसके प्रभाव का उदाहरण दे सकते हैं?

रिधिम जी : तो कई बार गुरुजी हमें ऐसी जगहों पर भेजते थे, जहां या तो भूत-प्रेत का साया होता था या वहां भार बढ़ जाता है, जिसे हम आमतौर पर भारी होना कहते हैं। हम उन जगहों पर जाते हैं और हम वहां होने वाली आत्मा को महसूस कर सकते हैं। घर में इन आत्माओं या भारीपन को दूर करने के लिए कुछ विशिष्ट मंत्र हैं। एक विशेष क्रिया है, जिसे गुरु ने सिखाया है और हम आंतरिक रूप से मंत्रों का जाप करते रहते हैं। और बिना किसी नाकामी के, अपने आप भारीपन कम हो जाता है, जो मेरे विचार में आत्मा के डरने या मंत्र से हार जाने का एक प्रमाण है।

सवाल : क्या यह एक बार की घटना है या आप इसे नियमित रूप से और लगभग हर बार देखते हैं, जब आप इस मंत्र का जाप कर रहे होते हैं? क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आप किस मंत्र का जिक्र कर रहे हैं?

रिधिम जी : मैंने एक बार गुरुजी से यह पूछा था कि यह नियमित घटना होगी या एकबारगी। तो, उन्होंने समझाया था कि यदि एक बार किसी व्यक्ति ने एक मंत्र का पर्याप्त बार जाप किया हो या फिर यदि उन्होंने मंत्र को सिद्ध करके आपको दिया हो, या यदि आपने मंत्र सिद्ध किया हो, तो मंत्र की शक्ति आत्माओं को भगाने में सक्षम होती हैं। मैं चामुंडा देवी मंत्र का जिक्र कर रहा हूं।

डॉ. शंकर नारायण ने गुरुदेव द्वारा सिखाए गए मंत्र विद्या के अपने अनुभव को साझा किया।

सवाल : अब जहां तक मंत्रों की बात है तो चामुंडा मंत्र जैसे सभी मंत्रों को उन्होंने आपसे कब तक करवाया। आपने कब तक ऐसा किया?

डॉ शंकर नारायण : आज भी करता हूं।

सवाल : नहीं, लेकिन मंत्र को प्रयोग करने योग्य बनने या सिद्ध होने में कितना समय लगा?

डॉ शंकर नारायण : मुझे नहीं लगता कि इसमें बहुत समय लगा। क्या हुआ था, आप जानते हैं। बाद में उन्होंने खुद मुझसे कहा था कि अब आप इन मंत्रों को कर सकते हैं।

सवाल : उन्होंने आपको कितने समय में बताया?

डॉ शंकर नारायण : मुझे नहीं लगता कि इसमें ज्यादा समय लगा। उन्होंने मुझे जल्द से जल्द गायत्री जाप दिया और फिर बाद में उन्होंने मुझे गुरु मंत्र भी दिया। यह सब करने में मुझे शायद 4, 5 महीने लगे होंगे, बस।

सवाल : बस? 5 महीने?

डॉ शंकर नारायण : हां

सवाल : और फिर आप उन मंत्रों का प्रयोग कर सकते थे?

डॉ शंकर नारायण : हां। उन्होंने कहा कि मैं इसका इस्तेमाल कर सकता हूं।

सवाल : वाह। और आपने उन्हें प्रयोग करने योग्य पाया?

डॉ शंकर नारायण : हां, उन्होंने खुद मुझे बताया था।

सवाल : यह तो सुपरसोनिक (आवाज़ की रफ्तार) गति है।

क्या आपको नहीं लगता कि यह मामला तो 'भेदभाव' में गिना जाना चाहिए? मेरा मतलब है हमें अपने मंत्र सिद्ध करने में बरसों लग गए और डॉ. शंकर नारायण ने बस चंद महीनों में कर दिखाया!

मैं सोचता हूं कि यह शायद इसीलिए मुमकिन हुआ क्योंकि वो गुरुदेव के सहकर्मी थे। यदि मैं कहूं कि यह एक व्यवसायिक भेदभाव है तो क्या यह जायज़ नहीं होगा?

वैसे मेरी इन बातों को आप जलन का नाम दे सकते हैं!

गुरुदेव ने भी मेरे इस मामले को उठाया और एक दशक तक बड़े खास अंदाज़ में मेरी टांग खींचते रहे। और मैंने भी तय किया कि मैं उनकी टांग खींचने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने दूंगा। ऐसे में डॉ शंकर नारायण मेरे लिए एक बड़ा बहाना बन गए।

राजीव हज़रत जो देहरादून और मुंबई के अलावा बाकी जगहों पर भी सेवा करते हैं, बताते हैं कि किस तरह मंत्र नकारात्मक ऊर्जा से बचाव करने के लिए कवच का काम करते हैं।

उनकी ये कहानी तो वाकई सुनने लायक है!

सवाल : तो, राजीव जी, आप इतने सालों से सेवा कर रहे हैं, क्या आपको कोई मंत्र दिया गया है?

राजीव जी : हां, बेशक, पिछले कुछ वर्षों में बहुत कुछ। वे कई वर्षों में बदल गए। जिस समय पर आप मंत्र विद्या करना शुरू करते हैं और फिर, जैसा कि एक गुरु को लगता है कि मंत्र को बदलना और दूसरे मंत्र की ओर बढ़ना आवश्यक है, तब व्यक्ति को अगला मंत्र मिलता है, और यह सिलसिला चलता रहता है।

सवाल : तो, गुरु कैसे तय करते हैं कि एक मंत्र पूरा हो गया है, और आप दूसरे पर जा सकते हैं?

राजीव जी : यह या तो सामने वाले के अनुभव के आधार पर हो सकता है, जब गुरु को बताया जाता है तो वो इससे जान पाते हैं कि कोई विशेष मंत्र पूरा हो गया है। या यह इन चीजों को आंकने की उनकी सहज क्षमता होती है।

सवाल : राजीव जी, क्या आपने कभी ऐसा अनुभव किया, जिसमें आपको विश्वास हो गया कि यह मंत्र की शक्ति के कारण था, चाहे आप उस समय जिस भी मंत्र का जाप कर रहे थे?

राजीव जी : भले ही आप जिस मंत्र का भी जाप कर रहे थे, यह उससे संबंधित ना हो, लेकिन निश्चित रूप से विभिन्न मंत्रों के प्रयोग के संबंध में ऐसा अनुभव हुआ है। कई बार हमें लोगों के घरों में जाकर उनसे मिलने के लिए कहा जाता है, जहां लोगों को बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे खराब स्वास्थ्य, आर्थिक परेशानियां और 100 अलग-अलग चीजें हो सकती हैं। और कई बार, जब हम इन घरों में जाते हैं, तो हम पाते हैं कि वे नकारात्मक शक्ति की मौजूदगी से प्रभावित हैं। और जब कोई उस स्थिति में होता है तो सबसे पहला काम मंत्र का पाठ शुरू करना होता है, और होता यह है कि कुछ मिनट या कुछ सेकंड के बाद कभी-कभी आप इनमें से किसी भी मंत्र को पढ़ना शुरू कर देते हैं। हम अपने सिर पर भार के जरिए नकारात्मक ऊर्जा की उपस्थिति महसूस करते हैं। और अक्सर कुछ मिनटों के लिए मंत्र का जाप करने के बाद, वो भार कम हो जाता है, जो शायद इस बात का प्रमाण है कि नकारात्मक शक्ति ने हमारे प्रति अपने विरोध को रोक दिया है। ऐसे कई मंत्र हैं, जो इसमें मदद करते हैं। यह चामुंडा मंत्र हो सकता है, या महागायत्री मंत्र हो सकता है। चामुंडा मंत्र नकारात्मक शक्तियों के विरुद्ध अत्यंत प्रभावशाली है, लेकिन महागायत्री मंत्र भी उतना ही असरदार है।

कई बार यदि ये आत्माएं आक्रामक अवस्था में होती हैं, तो वे आपको यह जताने की कोशिश करती हैं कि वे शिव हैं या वे मानवता के लिए सबसे बड़ी चीज हैं और वे आपको उनके लिए कुछ भी करने की हिम्मत देती हैं। बहुत बार जब वे सामान्य अवस्था में होती हैं, तो वे आपकी मस्का पॉलिश (चापलूसी) भी करती हैं।

सवाल : तो, राजीव जी, क्या आपने स्वप्न अवस्था में मंत्रों का कोई अनुभव किया है?

राजीव जी : हां, मुझे ऐसे अनुभव हुए हैं, जिनका आपने वर्णन किया है। मैं आपको एक बता दूं जो कई, कई साल पहले हुआ था, मुझे याद नहीं है कि कितने समय पहले। लेकिन मुझे सपने

में एक मंत्र दिया गया था। और ये काफी कुछ उन मंत्रों के समान लग रहा था जो आज हम करते हैं। लेकिन प्रासंगिक शब्द मेरी स्मृति से हटा दिए गए थे, यानी उस देवी या देवता का नाम जिनके द्वारा वो मंत्र दिया गया था, मेरी स्मृति से हटा दिया गया था। मुझे नहीं पता कैसे। फिर कुछ दिनों बाद वही बात दोहराई गई। लेकिन फिर, उस देवता का नाम, जिस पर यह मंत्र अंकित किया गया था, मेरी स्मृति से एक बार फिर से हटा दिया गया था।

तो अब मुझे स्वप्न अवस्था में मंत्रों का अनुभव हुआ है। मैं आपको बता दूं, यह कुछ हफ़्ते पहले ही हुआ था जब माताजी मेरे सपने में आई थीं। और मैंने स्वाभाविक रूप से उन्हें नमन किया जैसा कि आमतौर पर होता है। और, उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, "बेटा, चामुंडा मंत्र करो।" बस इतना ही था। यह बहुत ही छोटा सपना था। बस उनका एक वाक्य। और आप जानते हैं, गौर करने पर यह बिल्कुल सटीक प्रतीत होता है, क्योंकि यह शक्ति काल के ठीक बीच में था और शक्ति काल चामुंडा मंत्र का जाप करने का एक अच्छा समय है।

जो नहीं जानते उन्हें बता दें कि शक्ति काल दिवाली के कुछ दिनों बाद से शुरू होकर शिवरात्रि तक रहता है। इस दौरान विशेष तौर पर पुरुष अक्षम हो जाते हैं क्योंकि दाहिने ओर की ऊर्जाएं निष्क्रिय होती हैं। इसी वजह से पुरुष साल के बाकी समय की तुलना में इस अवधि में आध्यात्मिक रूप से कमजोर होते हैं।

आशीष जी गोपीगंज नाम के एक कस्बे में सेवा करते हैं, जो बनारस और इलाहाबाद के बीच स्थित है। आशीष जी को भी मंत्र विद्या के कुछ बड़े खास अनुभव हुए हैं। मुझे लगता है यह अनुभव जानने लायक हैं, क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी बताया, उस तरह से मैंने कभी नहीं देखा।

आशीष जी : सबसे पहले तो मैं यह कहूंगा कि जो कोई भी इसे सुनने वाला है, वो मंत्रों को हल्के में न लें, विशेष रूप से सिद्ध गुरु द्वारा दिए गए मंत्रों को। एक मंत्र का अपना एक उदाहरण बताता हूं। मैं रात में ध्यान कर रहा था। मैं महागायत्री कर रहा था और मुझे उस समय कमरे में एक बाहरी ऊर्जा की उपस्थिति महसूस हुई, और जब मैंने उस ध्यान से बाहर आने की कोशिश की तो मैं नहीं कर सका, क्योंकि मैं बहुत असहज था और फिर जब मैंने अपना मंत्र महागायत्री से चामुंडा देवी मंत्र में बदल दिया, तब मैंने वास्तव में उस बाहरी ऊर्जा से लड़ने के लिए ऐसा किया था, क्योंकि वो बाहरी ऊर्जा मुझे थोड़ा असहज कर रही थी। मुझे अपने

शरीर के तापमान में बदलाव महसूस हुआ। जब मैं महागायत्री मंत्र पर था, तो मैं अपने मंत्र में अधिक गर्माहट और ज्यादा शांति महसूस कर रहा था। लेकिन जब मैंने चामुंडा देवी मंत्र का जाप शुरू किया, तो मैं उस बाहरी ऊर्जा से लड़ने के लिए बहुत ठंडा और हल्का हो गया। तो मंत्रों के बदलाव से मुझे वो परिवर्तन महसूस हुआ।

गायत्री मंत्र में शरीर की अग्नि बढ़ाने की अद्भुत क्षमता होती है। जल की मदद से हम इसे संतुलित कर सकते हैं।

गायत्री मंत्र का जाप करते समय नियमित रूप से जल पीने से आप पानी की कमी एवं अपने गुस्से को दूर रख सकते हैं। मैं एक बात भूल नहीं सकता कि मैं अपने शुरुआती दिनों में महा गायत्री मंत्र का जाप करते समय घर में काम करने वाले खेमचंद नामक एक व्यक्ति से बेहद नाराज हो गया, क्योंकि उसने मेरे परिवार में दरार पैदा करने की कोशिश की थी। मुझे ना चाहते हुए भी उसे वापस भेजना पड़ा। इसके बाद मैंने अपने इस काम के लिए लगातार माफी मांगी। मैंने एक सबक भी सीखा कि महा गायत्री मंत्र को किस तरह नियंत्रण में रखा जा सकता है।

जहां गायत्री मंत्र हमें सांसारिक तत्वों से अलौकिक तत्व की ओर ले जाता है और हमें निचले चक्रों से उच्च चक्र में पहुंचाता है, वहीं ईथर या जल एक मूल तत्व है, जो इससे जुड़ा होता है। इसलिए इस मंत्र से आप अग्नि और जल पर नियंत्रण हासिल कर सकते हैं।

रवि त्रेहन जी महागायत्री मंत्र को लेकर अपना नजरिया कुछ यूं बताते हैं,

रवि त्रेहनजी : गुरुदेव ने कहा था कि महागायत्री एक महामंत्र है और इसे वेद माता कहा जाता है। इसे हम चारों वेदों का निचोड़ भी कह सकते हैं। यह इतना उच्च मंत्र है कि यह शरीर का ही नहीं बल्कि आत्मा का भी कल्याण करता है। इस मंत्र को नियमित रूप से करने से या इसका ध्यान करने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इंसान जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो सकता है। मंत्र की शुरुआत या उत्पत्ति से इसके संरक्षक विश्वामित्र जी हैं। एक बार जब वे अपने ध्यान से उठे और उनकी आंखें खुलीं तो उनकी नजरें धरती पर पड़ीं। पृथ्वी को 'भू' भी कहते हैं। तो उनकी पहली नजर 'भू' पर पड़ीं। फिर नजरें और ऊंची उठी तो पृथ्वी से ऊपर आकाश तक उनकी नजर गई, 'भुवा' जिसे 'अंतरिक्ष' कहा जाता है। फिर और ऊपर नजरें गईं, तो उनको स्वर्ग

नजर आया। 'स्वाह' का अर्थ है स्वर्ग। तो उनके मन में भावनाएं आईं कि पृथ्वी को, अंतरिक्ष को और स्वर्ग को बनाने वाले परमात्मा के सिवाय और कोई नहीं हो सकते है। और फिर उन्होंने इसके आगे 'ओम' जोड़ दिया ओम-भु-भुवा-स्वाह'। यह सूर्य मंत्र भी है। ऐसा नियमित रूप से करने से, हम सूर्य से प्रार्थना करते हैं कि हमें अपनी आध्यात्मिक यात्रा को भवसागर से पार होने के लिए हमें ज्ञान का वो प्रकाश दें कि हम जीवन और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाएं। अब गायत्री के बाद के आठ शब्द गुप्त हैं और इसके बारे में विस्तार से कहना मना है। लेकिन यह निश्चित रूप से ऐसा महा मंत्र है, जिसको लगातार करने से आप अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं, आत्मा का कल्याण कर सकते हैं और जीवन-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो सकते हैं।

नादौन के मेरे गुरु भाई संतोष जी के एक शिष्य हैं बबलू। बबलू ने हमसे महागायत्री मंत्र के बारे में बताया और इसके इस्तेमाल एवं प्रयोग को लेकर हमें अपनी समझ से रूबरू कराया,

सवाल : बबलू जी, क्या आपने किसी मंत्र का प्रयोग देखा है?

बबलू जी : हां, मैंने महागायत्री की शक्तियां देखी हैं। इसका प्रयोग भी देखा है। जब गुरुजी ने मुझे महागायत्री मंत्र दिया तो मैं रोज उसका जाप जल से करता था और गुरुजी ने भी कहा था कि मुंह में जल का घूंट भरकर महागायत्री जाप करो। यह उनका आदेश था। मैंने उनके निर्देशों का यथावत पालन किया। कुछ दिनों बाद मैंने देखा कि जब भी मैं मंत्र का जाप करता हूं तो इसकी समाप्ति पर मैं देखता हूं कि मैं जिस आसन में बैठकर जाप करता हूं, वो जगह गीली हो जाती है। मैंने गुरुजी को इस घटना के बारे में बताया और उनसे इसका कारण पूछा। उन्होंने जवाब दिया, "ऐसा जल के कारण होता है और गायत्री उसी जल में निवास करती है।"

मैं गायत्री से जुड़े और चमत्कार देखना चाहता था और जानना चाहता था कि इस मंत्र को करने से हमें क्या लाभ मिलेगा। एक बार मैंने सपना देखा कि एक विशाल दानव मेरा पीछा कर रहा है क्योंकि वो मुझे खाना चाहता है और उसने मुझे अपने हाथों में जकड़ लिया। मैं डर के मारे चिल्ला रहा था और मदद के लिए गुरुजी को पुकार रहा था, "गुरुजी, मुझे बचा लो, यह राक्षस मुझे खा जाएगा।" फिर, मैंने एक आवाज सुनी, “बेटा, अपने महागायत्री मंत्र का प्रयोग करो। महागायत्री जाप करते रहो।" जैसे ही मैंने महागायत्री जाप करना शुरू किया, मेरे हाथों से जल निकलने लगा और मैंने राक्षस पर उस जल के छींटे मारे। उसी समय राक्षस का सर्वनाश हो गया। उसे नष्ट कर दिया गया था। और फिर मैंने खुद को गुरुजी के साथ पाया। गुरुजी ने

मुझसे कहा, "देखो, यह महागायत्री की शक्ति है जो बड़ी से बड़ी बाधा को दूर करती है और सबसे बड़े राक्षस का नाश कर देती है। और इसलिए आपको महागायत्री जाप करते रहना चाहिए।"

जब आप मंत्रों का उपयोग रक्षा के अस्त्र के रूप में करते हैं, तो वो कई तरीकों से काम करते हैं। मैंने एक बार खुद को अपने सूक्ष्म शरीर में देखा, जहां मुझ पर एक ताकतवर जिन्न ने हमला कर दिया था। मैं नहीं जानता कैसे, लेकिन मैं उस जिन्न को दूर भगाने के लिए महा गायत्री मंत्र का प्रयोग कर बैठा। और फिर उस दैत्य को धराशायी होते देखकर बड़ा सुकून मिला।

आशीष जी अपनी बात आगे बढ़ाते हैं,

आशीष जी : मैं गोपीगंज के एक स्थान पर सेवा कर रहा था, जहां एक व्यक्ति आए और स्थान पर गुहार लगा रहे थे कि उनकी खेती के लिए पानी की बहुत समस्या हो रही है। आसपास पानी नहीं था और खेती के लिए पानी को लेकर उन्हें हमेशा परेशानी होती थी। इसलिए, हमने उन्हें एक हैंडपंप लगाने या अलग-अलग तरीके आजमाने के लिए कहा। तो उन्होंने बताया कि वे हर संभव कोशिश कर चुके हैं, लेकिन कुछ भी काम नहीं आया, क्योंकि वहां जमीन में पानी नहीं है। उन्होंने स्थान से मदद की गुहार लगाई। हमने कहा, ठीक है, कुछ कोशिश करते हैं। हम कुछ सरसों के बीज लेकर उनकी जमीन पर चले गए। हमने महागायत्री और सरसों से जमीन पर वार करने की कोशिश की। हमने इसे 2, 3 बार मारा। यह सुनने में शायद ज्यादा नाटकीय लगे, लेकिन मैं जो कहने जा रहा हूं, वो एक सच्चाई है कि तीसरी बार में थोड़ा पानी बाहर निकलने लगा। जमीन गीली हो गई। उसके बाद जब उस व्यक्ति ने उस जमीन को खोदने का प्रयास किया तो उस व्यक्ति को पानी मिल गया। तो उसने हमसे सिर्फ एक ही बात पूछी कि स्थान बदले में क्या चाहता है। उससे अनुरोध किया गया कि वो पानी को आसपास के ज्यादा से ज्यादा जमीन मालिकों के साथ बांटे। इस बात को 3-4 साल हो गए हैं और वो आज तक यह करते हैं। अब भी उस जमीन से जितना पानी निकलता है, वो उसे जितना हो सके आसपास के किसानों के साथ बांटते हैं।

गुरुदेव के शुरुआती शिष्यों में से एक राजी शर्मा को मंत्रों से बड़ा लगाव है। इस विषय पर उनका ज्ञान बड़ा तकनीकी है और उनके शब्दों में बड़ी गहराई होती है। उनके ज्ञान और अनुभव से सीखने के लिए बहुत कुछ है।

सवाल : क्या आप मेरी इस बात से सहमत होंगे कि महागायत्री वो मंत्र है, जो वास्तव में चेतना के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है और आपके भीतर प्रकाश को भी रोशन करता है। क्या आप इसे इस तरह से या किसी अन्य तरीके से परिभाषित कर पाएंगे?

राजी जी : मैं इसे दो तरह से परिभाषित करना चाहूंगा। गायत्री मंत्र ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला मंत्र है। यह मंत्र आपको न केवल दृश्य प्रकाश दिखाता है बल्कि अदृश्य प्रकाश का अनुभव भी कराता है। आप अदृश्य प्रकाश को नहीं देख सकते क्योंकि यह अदृश्य है। उस अदृश्य प्रकाश को दृश्य प्रकाश में दर्शाया या प्रकट किया जाता है। अदृश्य अनदेखा नजर आता है। गायत्री आपको यही प्रदान करती है।

सवाल : मुझे याद है कि आपने मुझे कई बार कहा था कि जब गुरुदेव ने आपको महागायत्री में दीक्षा दी थी तो आपको टब आदि में बैठना पड़ा था या आपको टब आदि में लेटना पड़ा था। क्या हमें इसके बारे में बता सकते हैं?

राजी जी : जब मैंने गायत्री मंत्र से शुरुआत की, तो गुरुजी ने कहा, "मैं चाहूंगा कि आप गायत्री मंत्र को पानी में करें। क्योंकि गायत्री वो जीवन है जो जल में है और जीवन जल में है।" और यही कारण है कि गुरुजी कहते थे कि मछली या ऐसा कोई भोजन भी नहीं लेना चाहिए। आपको शाकाहारी होना चाहिए और विशेष रूप से मछली या समुद्री भोजन को लेकर सावधान रहना चाहिए।

सवाल : तो आप कब तक पानी में बैठकर इस मंत्र को करते रहे?

राजी जी : तो पहले तो उन्होंने मुझे 40 दिन करने को कहा। इसलिए, मैंने इसे 40 दिनों तक किया, सुबह और शाम। हर सत्र में रोज लगभग 45 मिनट से एक घंटे तक। और फिर सुबह 45 मिनट से एक घंटे तक। और फिर मैं ग्रहण के समय इसे कर रहा था। उन्होंने मुझे उस समय इस मंत्र का जाप करने के लिए कहा था और इसलिए मैंने किया। तब मैं दूसरे घर में रहता था। वहां एक टब था, इसलिए मैं तब भी ग्रहण के दौरान जल में डूबा रहता था और अपना गायत्री पाठ पानी के अंदर करता था, चाहे गर्मी हो या सर्दी।

सवाल : आपका चेहरा पानी के अंदर रहता था या बाहर?

राजी जी : नहीं, अंदर। सबकुछ पानी के अंदर रहता था।

सवाल: आप इसे पानी के अंदर अपने चेहरे समेत डूबे रहकर कब तक कर सकते हैं?

राजी जी : मैं पानी में लगभग 7 या 9 डुबकी लगाकर पूरा गायत्री मंत्र कर सकता हूं।

सवाल : पूरे गायत्री मंत्र को आप 7 या 9 डुबकी के साथ कर सकते हैं, इसका क्या मतलब है?

राजी जी : यानी एक बार जब आप पानी के अंदर गए, तो आप सांस लेने के लिए बाहर आ जाते हैं, ना।

सवाल : हां, इसलिए मैं पूछ रहा हूं।

राजी जी : हां। तो, इस तरह मैं 7 या 9 सांसों के साथ कर सकता हूं।

सवाल : गायत्री का एक पाठ या पूरे 108?

राजी जी : पूरे 108 बार

सवाल : तो, आपने 108 बार पानी के अंदर 7 से 9 डुबकी लगाकर गायत्री मंत्र किया और जब आप पानी के अंदर थे तो आपको नीली रोशनी दिखाई दी?

राजी जी : सही। एक बार नहीं, जब भी मैं करता था तो मुझे यह दिखाई देती थी।

सवाल : क्या आप अपने मन में या फिर पानी के भीतर अपने शरीर के बाहर नीली रोशनी देखते थे?

राजी जी : अपने शरीर के बाहर, मेरी आंखों के पास, कभी-कभी मेरे पूरे शरीर के आसपास घूमते हुए या सिर के चारों ओर।

(अच्छा)

राजी जी : जब आप ब्रह्म मुहूर्त में गायत्री मंत्र करते हैं, तो गायत्री मंत्र की एकाग्रता वास्तव में बहुत पक्की होती है और यही गुरुजी कहते थे, "बेटा, इस मंत्र को सुबह होने से पहले करो।" सुबह-सुबह जब हम इस मंत्र को करते हैं, तो आपकी सांसें शिथिल हो जाती हैं और आपको अपने मन में, अपने पूरे मस्तिष्क में एक नारंगी रंग दिखाई देगा। तो सुबह के समय गायत्री का नारंगी या लाल रंग और मध्य संध्या के दौरान आपको सफेद रंग देखने को मिलता है। दोपहर या सूर्य के मध्यकाल के समय, जब आप इसे करते हैं तो आपको एक ज्योति (लौ) की तेज रोशनी मिलती है। कभी, यह एक ज्योति होती है या कभी-कभी यह आपके दिमाग में सिर्फ एक रंग के रूप में होता है।

सवाल : दिन के उस मध्यकाल का समय क्या है?

राजी जी : मध्याह्न सूर्य की वो दोपहर है जो ब्रह्म मुहूर्त की तरह बदलती रहती है, लेकिन यह दिन में 11.55 बजे से 12.35 या दोपहर 12.40 बजे के बीच कभी भी हो सकती है।

मंत्रों को लेकर लोगों की अलग-अलग समझ होती है। ज्यादातर लोग मानते हैं कि मंत्र से आध्यात्मिक विकास होता है और यह ध्यान में मदद करते हैं।

लेकिन मंत्रों, खास तौर पर सिद्ध मंत्रों के जरिए कुछ अनोखी उपलब्धियां हासिल की गई हैं। इनमें से एक उपलब्धि के बारे में पहले बताया जा चुका है, वो है सुरक्षा।

आगे हम कुछ और उदाहरण पेश करने जा रहे हैं। लोनावला के साथ-साथ मुंबई में भी सेवा करने वाले कपिल मल्होत्रा बताते हैं कि किस तरह उन्होंने दूसरों की रक्षा करने के लिए इन मंत्रों का इस्तेमाल किया। उन आत्माओं को वश में करने और उन्हें अनुशासित करने के लिए भी इन मंत्रों का उपयोग किया गया, जो इंसानों को परेशान कर रही थीं और उन्हें नुकसान पहुंचाने के लिए धमका रही थीं।

आइए कपिल जी को सुनते हैं,

कपिल जी : कई साल पहले, मैं शायद 15 साल पहले की बात कर रहा हूं, मेरे एक गुरु भाई और मुझे किसी के घर भी भेजा गया था, जो अक्सर स्थान पर आते हैं और सेवा भी करते हैं। उनके घर में कुछ नकारात्मक ऊर्जाएं थीं। तो गुरुजी ने हमें वहां जाकर कुछ छींटे (पवित्र जल छिड़कने) देने और वहां बैठकर उनके द्वारा दिए गए मंत्रों में से कुछ या एक मंत्र का जाप करने और उस घर से उन नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने के लिए कहा। हम उनके घर गए और हमने चारों ओर एक बूढ़ी औरत के रूप में नकारात्मक ऊर्जा महसूस की, जो बच्चों की दादी थी और निश्चित रूप से उस सज्जन की मां थीं। तो, मैं और मेरे गुरु भाई, दोनों बैठ गए और एक मंत्र का जाप करने लगे। हमने यह भी चर्चा नहीं की थी कि हम कौन-से मंत्र का जाप करने जा रहे हैं। हमने अपनी आंखें बंद कर लीं और हमने इस महिला को अपने सामने चित्रित किया। और मंत्रों को करते समय, यह महिला लगभग 4 या 5 फीट लंबी थी, और हमने उसे लगभग एक फुट या 12 इंच तक सिकुड़ते देखा और फिर, मेरा मतलब है कि वह इतनी छोटी हो गई और वह 6 इंच या 5 इंच या 4 इंच तक छोटी हो गई और फिर गायब हो गई। यह काफी चौंकाने वाला था। जब हम यह मंत्र कर रहे थे तब हम दोनों की आंखें बंद थीं। फिर जब हम घर से निकले तो हमने चर्चा की कि हमने क्या किया और हम दोनों ये जानकार चकित रह गए कि हमने एक ही मंत्र किया था। हमने उस महिला का वर्णन किया जिसे हम दोनों ने देखा और वो वही महिला थी। और ठीक ऐसा ही मेरे गुरु भाई ने भी अनुभव किया था। यह इस मंत्र के माध्यम से हुआ था।

सवाल : तो, आप दोनों ने एक ही घर में एक ही मंत्र किया लेकिन आप में से कोई भी नहीं जानता था, आपने मंत्र पहले से तय नहीं किया था?

कपिल जी : नहीं, हमने पहले से तय नहीं किया था।

सवाल : और फिर जब आपने अपने-अपने वर्णन साझा किए तो आपने पाया कि एक ही घर में आप दोनों ने अलग-अलग लेकिन एक जैसी सिकुड़न देखी?

कपिल जी : बिल्कुल। (वाह) बिल्कुल। हमने उसी महिला को देखा और जब मेरे गुरु भाई ने उस औरत का वर्णन किया तो मैं भी चौंक गया, क्योंकि मैंने भी वही देखा था।

सवाल: तो यह कौन-सा मंत्र था?

कपिल जी : यह महागायत्री मंत्र था।

(अच्छा)

कपिल जी : जब हम उन घरों में जाते हैं, जहां नकारात्मक ऊर्जा होती है तो हम आम तौर पर दूसरे मंत्र का उपयोग करते हैं लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, हम दोनों उस समय एक ही मंत्र का प्रयोग कर रहे थे।

मुझे एक वाकया याद आता है। नंदलाल नाम के एक सज्जन, जो खार के स्थान पर आने वाले पहले व्यक्ति और सेवादार थे, मुझे एक दुकान पर ले गए। उन्हें लगता था कि वहां कुछ नकारात्मक शक्तियां हैं, जिनके कारण यह दुकान किराए पर नहीं उठ रही थी। इससे उनके आर्थिक हालात बिगड़ रहे थे। तो जब मैं वहां गया, तो मैंने वहां कोई ऊर्जा महसूस की और फिर मैंने बिल्कुल वही किया, जो आगे कपिल जी बताने जा रहे हैं।

मैंने मानसिक रूप से एक लक्ष्मण रेखा या कील खींची। यह उस कमरे के चारों तरफ बनाया गया एक ऊर्जा चक्र था, ताकि जब तक मैं ना चाहूं वो आत्मा वहां से बाहर ना जा सके। जब मैं कुछ दिनों बाद वापस लौटा तो उस आत्मा को कैद कर लिया गया था और वो मदद और दया की गुहार लगा रही थी। उस आत्मा ने मुझे बताया कि वो नंदलाल के अंकल हैं और ये वादा किया कि यदि मैं उन्हें मुक्त कर दूं तो वो नंदलाल को दोबारा कभी नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। और फिर बिल्कुल वैसा ही हुआ।

जब नंदलाल को यह पूरा माजरा पता चला तो उन्होंने बताया कि उनके अंकल असल में मानसिक रूप से अस्थिर थे और कुछ साल पहले घर छोड़कर चले गए थे। संभवतः उन्होंने खुदकुशी कर ली थी। वो उस जगह को किराए पर देने से इसलिए रोक रहे थे, ताकि वो एकांत में वहां अपना ठिकाना बना सकें।

आइए वापस चलते हैं कपिल जी के पास,

कपिल जी : एक और घटना थी जहां हम दिल्ली के एक होटल में ठहरते थे, जो अच्छा नहीं चल रहा था। और हम जानते थे कि वहां कुछ अनिष्ट शक्तियां थीं। तो, एक रात मेरे गुरु भाई और मैं वहां एक कमरे में थे और अपने सपने में, मैंने देखा कि लगभग 10 फीट या 12 फीट लंबी, काली आकृति अंदर आ रही है। मैंने देखा वो आकृति मेरे गुरु भाई पर हमला करने की कोशिश कर रही है जो मेरे बाजू वाले बिस्तर पर आगे सो रहे थे। मैं उन्हें चिल्लाकर उठाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन यह वास्तव में नहीं हुआ। मैं बस एक झटके के साथ उठा। वो एक सपना था। तो, मैंने अगले दिन सुबह जाकर गुरुजी को इस बारे में बताया कि ऐसा हुआ है। तो गुरुजी ने कहा, "मुझे बताओ, क्या तुम्हें याद है कि वो आकृति कैसी दिखती थी?" मैंने जवाब दिया, "हां, मुझे याद है।" तो, उन्होंने कहा, "महागायत्री मंत्र करो और उस व्यक्ति या उस आकृति जो मैंने देखी थी, उसके चारों ओर एक कील (ऊर्जा चक्र) बनाओ और उसे उसी में कैद कर लो। और इस तरह वो यह उस व्यक्ति को परेशान करना बंद कर देगा जिसका वह होटल था।" और आश्चर्यजनक रूप से हमसा, मैंने ठीक वैसा ही किया जैसा गुरुजी ने करने को कहा था। हम वाकई नहीं जानते थे कि उसके बाद क्या होगा। उसके बाद तो हमें उस होटल में कभी कमरा नहीं मिलता था। वो हमेशा भरा रहता था। तो, गुरुजी की कृपा से वो उपाय काम कर गया और उस मंत्र के साथ उस नकारात्मक ऊर्जा को कैद कर दिया जो इन लोगों को परेशान कर रही थी।

सवाल : क्या कोई अन्य अनुभव है जिसे आप साझा कर सकते हैं, शायद कुछ और?

कपिल जी : गुरुजी ने देहरादून में एक स्थान पर किसी प्रकार की ऊर्जा की स्थापना की थी। उन्होंने अपने हाथ की छाप और गुरुदेव की कुछ तस्वीरें वहां रख दी थीं। एक रात मेरे एक गुरु भाई उस कमरे में सो रहे थे और उन पर कुछ नकारात्मक शक्तियों ने हमला किया। उसी रात उन्होंने बाहर आकर गुरुजी को यह घटना सुनाई। गुरुजी बहुत परेशान थे और उन्होंने मुझे कमरे में जाकर उसके चारों तरफ कील (ऊर्जा चक्र) बनाने को कहा। यह कमरे के चारों तरफ एक अदृश्य कील थी जो उन नकारात्मक शक्तियों को कमरे में ही बंद रख सके और वो वहां से भाग ना सके। तो, मैं कमरे में गया और एक मंत्र के साथ, मैंने उस कमरे पर कील बना दी। मुझे पता था कि नकारात्मक ऊर्जा अब पकड़ी गई है और कमरे में बंद है। मैं उस समय वहीं बैठा था। मुझे लगता है, लगभग 5 मिनट या 10 मिनट के भीतर, गुरुजी उस कमरे में आए और फिर मुझे लगता है कि उन्होंने उसे साफ कर दिया क्योंकि उसके बाद मुझे कोई नकारात्मक

ऊर्जा महसूस नहीं हुई। लेकिन इस मंत्र से मुझे पता चला कि वे बंद हैं और कमरे से बाहर नहीं निकल सकतीं। यह एक दिलचस्प अनुभव था।

सवाल : क्या आपको कभी सपने में कोई मंत्र प्राप्त हुए हैं?

कपिल जी : हां। मुझे सपने में एक मंत्र मिला। मुझे याद नहीं है कि वो देवता कौन थे, लेकिन मुझे एक मंत्र मिला। और जब मैं उठा तो मैं मंत्र भूल चुका था और मैंने गुरुजी से इसका जिक्र किया और उन्होंने कहा कि अगली बार जब भी मुझे सपने में ऐसी कोई चीज मिले, तो उसे नोट कर लेना।

सवाल : क्या लोगों के लिए सपने में मंत्र प्राप्त करना एक सामान्य अनुभव है?

कपिल जी : वैसे, मैंने सुना है कि कुछ लोगों को स्वप्न अवस्था में मंत्र प्राप्त हुए हैं।

मुझे याद है एक देवता ने मुझे मेरी स्वप्न अवस्था में एक मंत्र दिया था। दूसरे सपने में मुझे इसका प्रयोग बताया और तीसरे सपने में मुझे उस लोक में वरदान दिया, जहां उस मंत्र की मौजूदगी थी।

राजी शर्मा जी महामृत्युंजय मंत्र को लेकर अपना अनुभव बताते हैं।

सवाल : आप महा मृत्युंजय को कैसे परिभाषित करेंगे?

राजी जी : आप कह सकते हैं, महामृत्युंजय मंत्र, रक्षा और चामुंडा मंत्र, शिव मंत्र और चामुंडा मंत्र के संयोजन से बढ़कर है, जहां यह एक नई रोशनी में, एक नई शक्ति में एक नया रूप लेता है, जो कि महा मृत्युंजय मंत्र है जहां यह उन दोनों और उन सभी चीजों को नियंत्रित करता है जो संसार में नश्वर है। यह है महा मृत्युंजय मंत्र।

सवाल : इसका मतलब है कि जब लोग आम तौर पर महा मृत्युंजय को मृत्यु से लड़ने वाले मंत्र के रूप में देखते हैं, तो मुझे लगता है कि वे इसे एक बहुत ही संकीर्ण दायरे में सीमित कर रहे हैं। लेकिन आप जो कह रहे हैं वो बहुत व्यापक है और महा मृत्युंजय किसी को किसी बीमारी से

मरने से बचाने के बारे में नहीं है। यह विघटन को रोकने के बारे में है जिसका अर्थ है निरंतरता। क्या आपके कहने का मतलब यह है?

राजी जी : सही। बिल्कुल सही। जब मैं महा मृत्युंजय कर रहा था, तो मैंने देखा कि एक विशाल शिव हाथों में त्रिशूल लिए समुद्र से बाहर आ रहे हैं और ठीक सामने हैं।

सवाल : आपने इसे स्वप्न अवस्था देखा था या ध्यान अवस्था में?

राजी जी : यह एक स्वप्न अवस्था थी लेकिन यह स्वप्न, स्वप्न अवस्था जैसा नहीं था।

सवाल : तो इतने सारे संदर्भों को देखते हुए जो मैं समझ रहा हूं, वो ये है कि आप कह रहे हैं वो एक सामान्य सपने की तरह नहीं था, यह दूसरी अवस्था में जीवित रहने जैसा था, क्या आप यही कह रहे हैं?

राजी जी : यह सही है

सवाल : अच्छा। आप जो भी मंत्र कर रहे हैं, उन्हें कब से करते आ रहे हैं?

राजी जी : मैं हर दिन सभी मंत्र करता हूं। मैंने रक्षा मंत्र के साथ शुरुआत की और गुरुजी ने कहा था कि आप रक्षा मंत्र को किसी भी समय करते रहें, चलते समय, खाते समय, गाड़ी चलाते समय, जो कुछ भी करते हैं, इन्हें करते रहें और मैं इसकी गिनती रखूंगा ताकि आपको इसका हिसाब ना रखना पड़े। मैं इन मंत्रों को करता रहा और वो जैसे मेरी सांसें बन गए। फिर लगभग डेढ़ महीने बाद ही गुरुजी ने मुझे चामुंडा मंत्र दिया और चामुंडा मंत्र के साथ भी ऐसा ही हुआ। तब गुरुजी ने मुझे गायत्री मंत्र दिया। उन्होंने मुझे महा मृत्युंजय मंत्र नहीं दिया। तो, फिर उन्होंने मुझे 'आपो' के साथ यह गायत्री मंत्र दिया। सामान्य रूप से गुरुजी पहले महा मृत्युंजय मंत्र और फिर गायत्री और फिर गुरु मंत्र देते हैं।

बबलू महामृत्युंजय मंत्र को लेकर अपना अनुभव बताते हैं,

बबलू जी : जब गुरुजी मुझे महा मृत्युंजय का जाप दे रहे थे, तो मुझे पता नहीं था। मुझे अपने अन्य गुरु भाइयों से पता चला कि जब हम कड़ा आदि पहनते हैं तो हमें महा मृत्युंजय जाप करना होता है और इसका उपयोग रोगों को ठीक करने के लिए किया जाता है। मेरी एक इच्छा थी। शिवरात्रि के दौरान मैं किसी जगह पूजा करने गया था। वो सुबह का समय था। मुझे एक सपना आया कि गुरुजी ने मुझे एक बड़े पीपल के पेड़ के पास बैठाया और ऐसा लग रहा था कि पेड़ की जड़ें उलटी हुई हैं। गुरुजी ने मुझसे कहा, "बेटा, आज मैं तुम्हें वो शक्ति दूंगा जो तुम अनुभव करना चाहते हो।" उस समय उन्होंने मुझे महा मृत्युंजय की शक्तियों के बारे में बताया और मैंने देखा कि पेड़ के हर पत्ते पर महा मृत्युंजय के शब्द लिखे हुए थे। 'ओम-हौंग-ओम-जौंगसा' गुरुजी का जो भी मंत्र है। उन्होंने मुझे एक-एक शब्द का अर्थ समझाया और यह भी बताया कि किस विशेष उपचार में कौन-से शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है और मुझे वो जाप करने को कहा।

जब मैं नादौन गया, तो मैं वहां गुरुजी से मिला और उनसे मुझे महा मृत्युंजय जाप देने को कहा। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मुझे वही जाप दिया जो मुझे उनसे स्वप्न में मिला था। जब कोई महा मृत्युंजय जाप के साथ लौंग और इलायची बनाता है, तो वो ऊर्जा बड़ी से बड़ी बीमारी को ठीक कर सकती है क्योंकि उसमें उतनी शक्ति होती है। इसका उपयोग कई लोगों की बीमारी ठीक करने के लिए किया जाता था, जहां डॉक्टर उन्हें बताते थे कि इसे ठीक होने में समय लगेगा या यह बीमारी लाइलाज है।

रवि त्रेहन जी महा गुरु मंत्र के बारे में बताते हैं, जो गुरुदेव ने उन्हें सिखाया था। हम जिन मंत्रों का जाप करते हैं, उनमें यह सबसे प्रमुख मंत्रों में से एक है।

सवाल : गुरुदेव ने आपको महा गुरु मंत्र का महत्व कैसे समझाया?

रवि जी : महा गुरु मंत्र में 3 शक्तियों की व्याख्या की गई है जो हैं गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा। उनकी एक ही जड़ है। वे उसी परम शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। वे अलग-अलग अभिव्यक्तियां हैं लेकिन वास्तव में वे एक ही हैं। तो गुरुजी ने हमें बताया था कि यह इतना शक्तिशाली मंत्र है कि इस जाप को करते रहना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सभी मंत्रों को करने के बाद जब आप श्वास लें तो अंत में इस मंत्र को भी करें। गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा, गुरु साक्षात, से आगे भी शक्तियां हैं, जिन्हें हम परब्रह्म कहते हैं, परब्रह्म, तस्मै

श्री गुरुवे नमः। मैं इस देवता के चरणों की पूजा करता हूं, जिन्होंने इन शक्तियों की रचना की थी। और यह मंत्र इतना शक्तिशाली है कि गुरु पूर्णिमा के दौरान हम गुरुजी के चरणों में चढ़ाए जाने वाले जल को पीते हैं। वो जल इतना पवित्र, इतना शुद्ध और शक्तिशाली है कि हमारे सारे प्रारब्ध कर्म धुल जाते हैं। सभी नकारात्मक कर्म शुद्ध हो जाते हैं। और हमारे मन में जो भी शंकाएं हैं, वे उस जल की स्पष्टता से दूर हो जाती हैं, जिससे हमारे विचार और हमारा व्यक्तित्व निर्मल हो जाते हैं और हम आत्म-अनुभूति के साथ-साथ ईश्वर की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ते हैं। यह महा गुरु मंत्र का संक्षिप्त विवरण है। मंत्र जाप करने के लिए हमें कभी भी कोई सीमा नहीं रखनी चाहिए। जितने ज़्यादा, उतना अच्छा। आप जितना अधिक इसे करेंगे, आपको उतने अधिक नतीजे मिलेंगे।

एक बिज़नेसमैन होने के नाते मैंने हमेशा यह माना है कि एक बड़े पैकेट से तीन छोटे पैकेट हमेशा बेहतर होते हैं। इसलिए मैं यह सलाह देना चाहूंगा कि लोग अपने रोज के काम करते हुए अपने मंत्रों का जाप करें, चाहे आप पैदल चल रहे हों, खाना बना रहे हों, गाड़ी चला रहे हो या कोई भी दूसरा काम कर रहे हों।

राजी शर्मा का मन अपनी मंत्र विद्या से कभी नहीं भरता। मैं उनसे जितनी ज्यादा चर्चा करता हूं, वो उतना ज्यादा बताते हैं।

राजी शर्मा : तो गुरुजी ने कहा था कि गायत्री मंत्र के बाद जो महा मृत्युंजय मंत्र के ऊपर है। गायत्री भी कहती हैं कि मुझसे परे भी कुछ है। तो इन मांत्रिक स्तरों को पार करके हम सभी मंत्रों के पंच मुखी या पंच तत्व मुखी पर पहुंचते हैं और आगे बढ़कर गायत्री के पंच मुख या शिव के पंच मुख की तरह 'पंच' बन जाते हैं। वे सभी एक में मिल जाते हैं जो गुरु मंत्र है जो कहता है कि गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा, गुरु साक्षात परब्रह्मा, तस्मै श्री गुरुवे नमः। सभी गुरु मंत्र गुरु और शिष्य के बीच विशिष्ट मंत्र हैं। लेकिन अंत में सभी मंत्रों को एक में मिलाया जा सकता है, क्योंकि वो सभी ब्रह्मांडों का, सभी नादों का संयोजन है और अंतिम अनंत मंत्र बन जाता है। लेकिन यह गुरु का आह्वान करने का मंत्र भी है।

कृष्ण मोहन जी दुर्गापुर में एक स्थान चलाते हैं और उन्हें बड़ी विचित्र मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। वहां ना सिर्फ काले जादू का बोलबाला है, बल्कि और भी कई समस्याएं हैं, जो बड़े शहरों में हमें प्रभावित नहीं करती हैं।

सवाल : कृष्ण मोहन जी, मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूं, आप कितने वर्षों से मंत्र विद्या कर रहे हैं?

कृष्ण मोहन जी : मंत्र विद्या में? मुझे लगता है '76 से।

सवाल : मतलब 35 वर्षों से। इन मंत्रों को करने से आप पर क्या प्रभाव पड़ा और आपने क्या देखा?

कृष्ण मोहन जी : इससे मुझे शक्ति मिलती थी। मुझे उनका जाप करना अच्छा लगता था और यह मुझे ऊर्जा विकसित करने, मेरे मस्तिष्क और तनाव को नियंत्रित में मदद करते और मुझे शक्ति देते थे। ये मुझे गलत निर्णय लेने या गलत दिशा में जाने से बचाते थे और जब मैं एक युवक था तो मुझे बदला लेने की भावना से दूर रखते थे। मैं इसके लिए मंत्रों का जाप करता था।

सवाल: आप जो कह रहे हैं, उससे मैं यह समझ सकता हूं कि यह आपको अपनी चेतना का स्तर बढ़ाने में मदद करते थे?

कृष्ण मोहन जी : हां, बिल्कुल सही।

सवाल : तो एक बात बताइए कि क्या इन मंत्रों के प्रयोग से आपको कोई फायदा हुआ या आपने किसी की मदद करने के लिए इनका इस्तेमाल किया?

कृष्ण मोहन जी : मैंने लोगों की रक्षा के लिए इन मंत्रों का प्रयोग किया है। यह गुरुजी के आशीर्वाद से किया जाता था। उनके संपर्क में आने के बाद मेरे ख्याल से हमने 75 से 80% सफलता हासिल की है। सफलता इस मायने में है कि विभिन्न प्रकार की समस्याओं के साथ एरिया बेल्ट होते हैं ना, यानी अपराध भी किया गया है और हमें उसे बचाना भी है।

सवाल : तो, आपको जो मंत्र मिले हैं, क्या आप हमें इसका उदाहरण दे सकते हैं, जहां आपने लोगों के फायदे के लिए इस मंत्र विद्या का उपयोग किया हो?

कृष्ण मोहन जी : मुझे लगता है कि मैंने आपको एक बार बताया है। जैसे, खदानों में बहुत दुर्घटनाएं होती हैं और उसमें भी पानी भर जाता है। तो गुरुजी कहते थे कि खदानों में काम करने वाले लोग प्रकृति से लड़ते हैं। वो प्रकृति के खिलाफ काम करता है। इसी से वो खनन कर पाता है। इसलिए खदानों में मौजूद अप्राकृतिक बुराइयां समस्याएं पैदा करती हैं। यह वहां काम करने वाले लोगों को प्रभावित करती है, क्योंकि इससे दुर्घटनाएं होती हैं या मजदूरों की मृत्यु भी होती है और नुकसान का सामना करना पड़ता है। अतः इंसानों से जुड़ीं इस प्रकार की दुर्घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए हमें कुछ शक्ति का उपयोग करना होता है। खदानों में गैस निकलती है, जिससे लोग पिघलकर मर सकते हैं। मेरे शिष्य थे, जो हमें इन घटनाओं के बारे में बताते थे। गुरुजी ने हमें मंत्र जाप करने और उस क्षेत्र में घूमने की सलाह दी थी। उन्होंने उन्हें यह भी आश्वासन दिया कि जब तक आप सेवा कर रहे हैं, मजदूरों, शिष्यों को कुछ नहीं होगा। फिर वो आगे समझेगा। फिर हम उस क्षेत्र में घूमते और गुरुजी द्वारा दिए गए मंत्रों से युक्त सरसों छिड़कते और उन्हें लौंग, इलाइची के उपयोग के बारे में बताते। उन्होंने भी संपूर्ण अवधि पूरी की, और कुछ भी नहीं हुआ।

इस पॉडकास्ट में बताए गए मंत्रों के अलग-अलग फायदों के अलावा, मैंने यह गौर किया है कि मंत्र आपको विचारों के भंवर में भटकाने के बजाय, आपके दिमाग को रचनात्मक काम में लगाते हैं।

मंत्र विद्या के अनेक फायदे हैं। इससे आपको शक्ति प्राप्त होती है, आपका आभामंडल विकसित होता है, दिमाग सही दिशा में काम करता है, आप में अलौकिक काबिलियत पैदा होती है और आपकी चेतना का स्तर कई गुना बढ़ जाता है।

मुझे लगता है इससे ज्यादा किसी को और क्या चाहिए। मैं सोचता हूं हमें ज्यादा से ज्यादा मंत्र उच्चारण करना चाहिए।

वैसे, आप उस शख्स को क्या कहिएगा, जिन्होंने आपका नव निर्माण किया, आपको नए रूप में ढाला और आपको मस्तिष्क और आत्मा से दौलतमंद बना दिया।

श्री रवि त्रेहन की लिखी इस उर्दू शायरी पर आपका क्या ख्याल है,

गुज़र रही थी ज़िंदगी ख़िज़ां की तरह
आए आप जश्न-ए-बहारां की तरह
भटक रहा था चौरासी की गर्दिश में
रेहमत-ए-ख़िदमत बख्शी
नूर-ए-इबादत की तरह

तुम ही गुरु हो, तुम ही मुर्शीद, तुम ही ख़ुदा मेरे
पड़ा हूं दर पे तेरे रूह-ए-बेताब की तरह
गुज़र रही थी ज़िंदगी ख़िज़ां की तरह
आए आप जश्न-ए-बहारां की तरह

'ख़िज़ां' का मतलब है पतझड़ की पत्तियों-सी एक नीरस ज़िंदगी।

'जश्न-ए-बहारां' यानी बहारों के वो खुशनुमा रंग जो तुम मेरी जिंदगी में लाए।

मैं तो बस यूं ही दर-दर बेमतलब ही भटकता रहता हूं।

आपने जगाई 'रेहमत-ए-ख़िदमत' यानी निस्वार्थ भाव से सेवा करने की ख्वाहिश, जो मुझे 'नूर-ए-इबादत' यानी एक दिव्य पूजा के एहसास की ओर ले आया।

अंत में,

गुज़र रही थी ज़िंदगी ख़िज़ां की तरह
आए आप जश्न-ए-बहारां की तरह।